भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 5 **मार्च** 2004 **अंक** 3

मानव सभ्यता के विकास में पुस्तकों का पूर्ण योगदान है। पुस्तकालयों में मानव सभ्यता की कहानियाँ रहती हैं। जब तक मानव सभ्यता रहेगी, तब तक पुस्तकें रहेंगी। पुस्तकें होंगी तो पाठक होंगे, लेखक होंगे, प्रकाशक होंगे और ऐसे पुस्तक मेले होते रहेंगे।

मेरा मानना है कि हमारे देश में ही लिखने की कला का जन्म हुआ, विकास हुआ बाद में लिपि को सुन्दर बनाने में बाहर से आयी तकनीक का सहारा लिया गया। भारत में पुस्तक का पुराना गरिमामय इतिहास है। पूरे विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ माता सरस्वती, विद्या की देवी मानी जाती हैं जिनके एक हाथ में वीणा एवं दूसरे में पुस्तक है, यानी नीरस पुस्तक नहीं सरस, संगीत कलात्मक पुस्तकें।

पुस्तक की एक अपनी खुशबू होती है, जायका होता है। पुस्तकों का एक अस्तित्व है, एक वजूद है, अपना व्यक्तित्व है। लेखक, प्रकाशक सब इसमें जुड़ते हैं, एक पुस्तक देखने से ही यह पता चलता है कि यह किस लेखक की है ओर किस प्रकाशक की।

आज इंटरनेट के जमाने में भी पुस्तकों का कोई विकल्प नहीं। पुस्तकों को आप कहीं भी, खेत खलिहान, रेल, हवाई जहाज, घर में लेट कर बैठ कर कहीं भी पढ़ सकते हैं, लेकिन इंटरनेट में ऐसी सहजता कहाँ। पुस्तकों में सत्यं शिवं सुंदरम् का अद्‌भुत मिश्रण है। दुनिया में जो भी सुन्दर है वह हमेशा बना रहेगा। इसलिए पुस्तकें हमेशा मानव सभ्यता के साथ रहेगी।

— डॉ० मुरलीमनोहर जोशी
मानव संसाधन विकास मंत्री
विश्व पुस्तक मेले के उद्‌घाटन के अवसर पर

लिखित अभिव्यक्ति से भारत का सम्बध 6000 वर्षों से भी बहुत अधिक पुराना है। दुर्भाग्यवश इस प्रकार के सुनियोजित प्रयत्न होते रहे जिनका उद्देश्य भारत की उपलब्धियों को नकारना या छोटा करके दिखाना रहा है। इन प्रयासों के पृष्ठभूमि में कुछ छिपे मंतव्य रहे हैं। **— ब्रजकिशोर शर्मा**
अध्यक्ष, नेशनल बुक ट्रस्ट

ज्ञान की साधना, शब्द साधना से ही सृष्टि के मूल सत्य का साक्षात्कार किया जा सकता है।

पाठकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है ऐसे में हमारा दायित्व है कि हम उन्हें उच्चस्तरीय पठनीय सामग्री दें। **— सर विद्या एस० नायपाल**

पुस्तकालय संस्कृति

पुस्तक और पुस्तकालय एक-दूसरे के पूरक हैं। पुस्तक बिना पुस्तकालय नहीं और पुस्तकालय के बगैर पुस्तक नहीं। आज पुस्तकें हैं, किन्तु पुस्तकालय नहीं हैं, यही कारण है कि पुस्तकें अपनी सार्थकता सिद्ध नहीं कर पातीं।

विश्व पुस्तक मेले में पुस्तकालय और पुस्तक प्रकाशन पर गोष्ठी हुई। प्रो० अमरीक सिंह ने चर्चा शुरू करते हुए कहा—पुस्तकें ज्ञान की आधार हैं। शिक्षा के विकास में पुस्तकालयों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। श्रीमती कल्पनादास गुप्ता का विचार था—समाज के हित तथा बदलते परिदृश्य में पुस्तकालयों तथा पुस्तक प्रकाशन को मिलकर काम करना चाहिए।

इस गोष्ठी में पुस्तक प्रकाशक-वितरक तथा पुस्तकालयाध्यक्ष ने भी चर्चा में भाग लेते हुए प्रकाशन तथा वितरण की समस्या पर अपने विचार प्रकट किये।

वस्तुस्थिति यह है कि पुस्तकें हैं किन्तु पुस्तकालय कहाँ हैं ? शिक्षण संस्थाओं, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों की स्थिति दयनीय है, सार्वजनिक पुस्तकालय नाम मात्र को हैं। कारण है कि ज्ञान के स्रोत पुस्तकालयों के विकास पर गम्भीरतापूर्वक विचार नहीं किया गया। सतत ज्ञान के वाहक पुस्तकालयों के महत्त्व और उसकी समस्या को दृष्टि में रखते हुए विचार करने की अपेक्षा है।

पुस्तकालय हमारी सभ्यता तथा संस्कृति की बौद्धिक धरोहर हैं। इनकी रक्षा तथा विकास करना हमारा कर्त्तव्य है। आज एलेक्ट्रॉनिक युग में पुस्तकों का प्रकाशन जितना सरल हो गया है, पुस्तकों के प्रति एलेक्ट्रॉनिक संसाधनों ने पुस्तकों के प्रति लोगों की रुचि कम कर दी है। यह चिन्ता का विषय है। शिक्षण संस्थाओं को अनेक एलेक्ट्रॉनिक उपकरण सुलभ कराये जा रहे हैं किन्तु पुस्तकालयों को साधन तथा सुविधा सम्पन्न बनाने की दिशा में कोई प्रयास नहीं हो रहा है। दृश्य जगत चमत्कृत तो करता है किन्तु मानस पटल पर उसका प्रभाव-स्थायी नहीं होता।

पुस्तकालय बौद्धिक विकास के आधार हैं। युग-युगों से अर्जित और समकालीन ज्ञान पुस्तकों में समाहित है। जन-जन तक पुस्तकें पहुँचे बिना समाज के, राष्ट्र के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती।

आज देश में सुनियोजित ढंग से प्रत्येक नगर में सुनियोजित कार्यक्रम के अन्तर्गत पुस्तकालय संस्कृति केन्द्र स्थापित करने की आवश्यकता है।

प्रत्येक प्रदेश तथा केन्द्र में पुस्तक और पुस्तकालय के लिए निदेशालय स्थापित कर उसके अन्तर्गत प्रत्येक नगर तथा उपनगर में शिक्षा संस्थाओं की भाँति सार्वजनिक पुस्तकालय स्थापित किये जाने चाहिए। उनकी स्थापना और उनका संचालन गम्भीरतापूर्वक निश्चित योजना के अन्तर्गत किया जाय। इन पुस्तकालयों के भवन ऐसे बनाये जाँय जहाँ पुस्तकें रखने, पाठकों के बैठने तथा साहित्य चर्चा के लिए आवश्यक स्थान हो। पार्किंग का स्थान हो। पाठकों की रुचि और आवश्यकता के अनुसार पठनीय सामग्री सुलभ कराई जाय। नवीनतम ज्ञान के साधन सुलभ कराये जाँय। इसके सुपरिणाम नज़र आयेंगे। व्यर्थ भ्रमण करने वाले युवक इन पुस्तकालयों में आयेंगे और उन्हें जीवन-दिशा मिलेगी।

विश्व पुस्तक मेले में 'आधुनिक समाज में ज्ञान-केन्द्र के रूप में सार्वजनिक पुस्तकालय' विषय की स्थापना करते हुए भारत सरकार के संस्कृति विभाग के सचिव श्री धीरेन्द्रकुमार ने कहा—''भारत जैसे बहुभाषी देश में सांस्कृतिक विभिन्नता के बावजूद भारत के पुस्तकालय देश के विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। भारत में विभिन्न विषयों के क्षेत्र में ज्ञान का व्यापक भण्डार है।''

शेष पृष्ठ 8 पर

पुरस्कार-सम्मान

गोविन्दचंद्र पाण्डे को सरस्वती सम्मान

सुप्रसिद्ध इतिहासकार, लेखक एवं संस्कृत के विद्वान **प्रो० गोविन्दचंद्र पाण्डे** को वर्ष 2003 का प्रतिष्ठित सरस्वती सम्मान दिये जाने की घोषणा की गयी है। अस्सी वर्षीय श्री पाण्डे को यह सम्मान उनकी संस्कृत काव्यकृति 'भागीरथी' के लिए प्रदान किया जायेगा। पुरस्कार में पाँच लाख रुपये की राशि, प्रशस्ति पत्र और एक प्रतीक चिन्ह शामिल है। पुरस्कार राशि की दृष्टि से यह देश का सबसे बड़ा साहित्यिक सम्मान है। के०के० बिड़ला फाउंडेशन के अनुसार पिछले दस वर्ष में 18 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकों पर विचार विनिमय करने के बाद बारह सदस्यीय चयन परिषद ने श्री पाण्डे की काव्यकृति का चयन किया। 1923 में इलाहाबाद में जन्मे श्री पाण्डे भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के अध्यक्ष हैं। राजस्थान तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालयों के कुलपति रह चुके हैं। डॉ० पाण्डे प्राच्य विद्या, इतिहास तथा दर्शन के सुप्रसिद्ध विद्वान हैं।

अशोक वाजपेयी को बिड़ला फेलोशिप

हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक **अशोक वाजपेयी** और इतिहासकार **डॉ० भगवानदास पटेल** को वर्ष 2003-04 के के०के० बिड़ला फाउंडेशन फेलोशिप के लिए चुना गया है। यह फेलोशिप एक साल के लिए दी जाती है। फेलोशिप के अन्तर्गत 14,000 रुपये प्रतिमाह की वृत्ति और 40,000 रुपये एकमुश्त दिए जाते हैं। वाजपेयीजी को 'आधुनिक भारतीय कविता' पर शोध के लिए यह फेलोशिप प्रदान की गई है। वहीं पटेल को 'मौखिक, जनजातीय और साहित्यिक महाकाव्यों में महिलाओं की स्थिति के तुलनात्मक अध्ययन' के लिए यह फेलोशिप दी गई है।

बदलती लेखनी की धार

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री विष्णुकांत शास्त्री ने 2 फरवरी 2004 को वाराणसी के वरिष्ठ पत्रकार सर्वश्री ईश्वरचन्द्र सिनहा, पारसनाथ सिंह, आनन्द बहादुर सिंह, राजीव अरोड़ा तथा छायाकार विजय सिंह को हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान स्वरूप शाल तथा स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया। इस अवसर पर शास्त्रीजी ने कहा—आजादी के समय की पत्रकारिता में तोप का मुकाबला करने की ताकत व समर्पण की भावना थी। आज के युग में सनसनीखेज पत्रकारिता के चक्कर में पत्रकारों ने उसके साधन की पवित्रता का विचार छोड़ दिया है। राजसत्ता के साथ लेखनी की धार नहीं बदलनी चाहिये। पत्रकारों में सिद्धान्तों के प्रति समर्पण का भाव होना चाहिये। सम्मान खरीदा नहीं जा सकता यह तभी प्राप्त होगा जब आचरण में विशिष्टता हो।

स्मृति-शेष

ईश्वरचन्द्र सिनहा

दो फरवरी को राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्रीजी ने सिनहाजी को शाल ओढ़ा कर सम्मानित किया था, वह शाल अभी उतरा भी नहीं था कि 10 फरवरी 2004 को उनका निधन हो गया। सिनहाजी उस अतीत की धरोहर थे जिसने 1930 में काशी के 'आज' दैनिक का प्रकाशन बन्द होने पर पत्रकारिता जगत के भीष्म पितामह बाबूराव विष्णु पत्रकारिता के निर्देशन में साइक्लोस्टाइल 'रणभेरी' के लिए संवाद संकलन कर ब्रिटिश सरकार को विचलित कर दिया था।

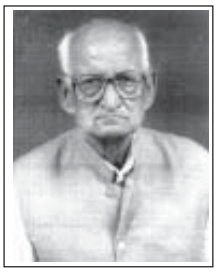

काशी के ईश्वरगंगी क्षेत्र में 6 जुलाई 1914 को आपका जन्म हुआ। 1930 में हाईस्कूल परीक्षा देने के पूर्व स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े और गिरफ्तार हो गये। स्वाध्याय द्वारा आपने उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, हिन्दी का ज्ञान प्राप्त किया। 1930 से 1951 तक सक्रिय राजनीति में रहे। अनेक बार जेल गये। 1951 से वे पूरी तरह पत्रकारिता से जुड़ गये। 1946 से 1950 तक दैनिक 'सन्मार्ग' के संवाददाता रहे। मार्च 1950 से 13 अप्रैल 1971 तक वाराणसी के दैनिक 'आज' के मुख्य संवाददाता, विशेष संवाददाता, युद्ध संवाददाता, समाचार सम्पादक, अग्रलेख लेखक तथा वरिष्ठ सहायक सम्पादक के रूप में कार्यरत रहे।

वे प्रतिदिन शाम को नगर के प्रमुख क्षेत्र में निकल जाते और मानवीय संवेदना का कोई न कोई समाचार ले आते। 25 फरवरी 1972 को वाराणसी से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'जनवार्ता' के प्रधान सम्पादक बने। 1980 में अवकाश ग्रहण करने के बाद भी 'जनवार्ता' के परामर्शदाता रहे।

काशी का पराड़कर स्मृति भवन सिनहाजी की निष्ठा का प्रतीक है। उनके प्रयास से ही भवन बन सका। काशी की पत्रकारिता के इतिहास के वे शलाका पुरुष थे। सिनहाजी के प्रति 'भारतीय वाङ्मय' की विनम्र श्रद्धांजलि।

प्रो० एस०के० वर्मा

प्रो० शिवेंद्र किशोर वर्मा का निधन 26 जनवरी 2004 को मुम्बई में हो गया। वर्माजी अंग्रेजी भाषा, अनुप्रयुक्त भाषविज्ञान तथा भाषा-प्रकार्य सम्बन्धी अध्ययनों से जुड़े प्रखर भाषाविज्ञानी थे। 29 जुलाई 1931 को पटना में जन्मे प्रो० वर्मा की शिक्षा बिहार में ही हुई। एडिनबरा विश्वविद्यालय से अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान पर उन्होंने पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। पटना विश्वविद्यालय में वे अंग्रेजी भाषा-साहित्य के प्रवक्ता रहे फिर हैदराबाद स्थित केन्द्रीय अंग्रेजी और विदेशी भाषा संस्थान में आ गए। इस संस्थान के कुलपति पद से उन्होंने अवकाश ग्रहण किया।

भारत के अंग्रेजी विभागों, भाषाविज्ञान विभागों, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से वे गहरे जुड़े हुए थे। देश-विदेश में उनके शिष्यों और चाहनेवालों की बड़ी संख्या है। वे लक्ष्यवेधी वैय्याकरण थे और उच्चकोटि के समाजभाषा वैज्ञानिक। उनके निधन से भाषाचेता समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। दिवंगत आत्मा को 'भारतीय वाङ्मय' की श्रद्धांजलि।

हिन्दी की अन्तर्राष्ट्रीय पहचान

देश में अंग्रेजी के प्रति भले ही लोगों का मोह बना हुआ हो पर अमेरिका में भारतवंशियों का हिन्दी के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा है और यही कारण है कि इस समय वहाँ करीब तीस से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी सीखने पढ़ने की सुविधा उपलब्ध हो गयी है।

आज अमेरिका में करीब 32 लाख भारतीय हैं। प्रवासी भारतीयों की बढ़ती आबादी के कारण शिकागो विश्वविद्यालय, वाशिंगटन विश्वविद्यालय, कोलम्बिया विश्वविद्यालय, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय और बर्कले विश्वविद्यालय समेत 30 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी की शिक्षा दी जा रही है।

अमेरिका में हिन्दी जगत, विश्व विवेक, विश्व सौरभ जैसी हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है।

— सुरेश रितुपर्णका

विश्व हिन्दी न्यास के अन्तरराष्ट्रीय समन्वयक

नये शब्दों का निर्माण

विगत वर्षों में हिन्दी के नये शब्दों का निर्माण नहीं करने के कारण ही नयी प्रौद्योगिकी, बदलती व्यवस्था के मुताबिक हिन्दी शब्दकोश मजबूत नहीं हो सका, जिससे वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी पिछड़ गये। 'शिथिलता के पाप' को छोड़कर हिन्दी साहित्य जगत को शब्दकोश को मजबूत करने के लिए आगे आना होगा।

संचार सुविधाओं के शब्दों को प्रामाणिक सूचना देनेवाला हिन्दी साहित्य में क्या प्रामाणिक सूचना देनेवाले ग्रन्थ हैं? पिछले 25 वर्षों से किसी हिन्दी शब्दकोश का संशोधित संस्करण नये शब्दों के साथ नहीं आया है। आधुनिक विज्ञान के शब्दों के चलते पहले से ही फिसड्डी हिन्दी की स्थिति आगे भी सुधार पाने की सम्भावना कम ही है। वर्तमान में तेजी से खुल रहे अंग्रेजी माध्यम से विद्यालयों से स्पष्ट है कि अंग्रेजी की जानकारी होने की बाध्यता की स्थिति बेहद भयावह है। हिन्दी जगत की चुनौती है कि जरूरत के मुताबिक नये शब्दों का निर्माण हो।

— राज्यपाल विष्णुकान्त शास्त्री

हर केबल पर समाचार आ रहा है फिर भी अखबार की तड़प कम नहीं होती। हमें समाचार को पढ़ने की इच्छा होती है, पर जो लिखित शब्द होते हैं उनकी ताकत कुछ और होती है। **— डॉ० रामदरशमिश्र**

पुस्तक मेले का सूनापन

14 से 22 फरवरी 2004 तक दिल्ली में आयोजित 16वें विश्व पुस्तक मेले पर 'हिन्दुस्तान' की सम्पादकीय टिप्पणी

दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले का फीकापन एक बार फिर यह स्पष्ट करता है कि लोगों की पुस्तकें पढ़ने में दिलचस्पी लगातार घटती जा रही है। इसके प्रमुख कारण बदलती परिस्थितियों के तहत आम जीवन में टीवी, रेडियो, इंटरनेट, डीवीडी, कैसेट, सिनेमा आदि जैसे संचार साधनों का हावी होना है, लेकिन व्यवस्थागत स्थितियाँ भी कम जिम्मेदार नहीं। देश में साक्षरता-दर बढ़ने की तार्किक परिणति अधिक संख्या में पुस्तकों के छपने और उन्हें अधिक पाठकों द्वारा पढ़े जाने के रूप में सामने आनी चाहिए, जबकि ऐसा कहीं दिखलाई नहीं पड़ता। टीवी, इंटरनेट, डीवीडी या कैसेट संस्कृति के व्यापक प्रसार से पुस्तकें पढ़ने की प्रवृत्ति को आघात लगना अस्वाभाविक नहीं क्योंकि इस बदलाव का असर तो दुनिया भर में देखने को मिल रहा है। पर, भारत में स्थितियाँ कुछ विचित्र तरह की ही हैं, जिनसे पाठकों से लेकर पुस्तक उद्योग तक को नुकसान पहुँच रहा है। प्रकाशकों द्वारा किताबों की कीमतें अत्यन्त ऊँची रखी जाती हैं, जिससे वे आम पाठक की पहुँच से बाहर होती गई हैं। कॉलेजों, विश्वविद्यालयों व अन्य संस्थानों के पुस्तकालयों में अच्छी पुस्तकों के बजाए उन पुस्तकों को तरजीह दी जाती है, जिन पर खरीद का फैसला लेने वाले लोगों की मुट्ठी अधिक गरम की जाती है। ऐसी पुस्तकों को थोक में खरीद लिया जाता है, जिसे पाठकों के प्रति अन्याय के अलावा क्या कहा जा सकता है? आज पुस्तकों की थोक खरीद एक बहुत बड़ा उद्योग बन चुका है, जिसमें पाठकों की पसन्द, रुचि और पुस्तकों की उपयोगिता गौण होते गए हैं। सबसे बड़ा पैमाना इन अधिकतर पुस्तकालयों में कुछ व्यक्तियों की जेब गरम कर पुस्तकें बेचना हो गया है। यह सिलसिला पुस्तकों और लेखकों दोनों की विश्वसनीयता पर भी सवालिया निशान लगा रहा है, जिसके बारे में समय रहते फौरी कदम नहीं उठाए गए तो स्थिति बदतर ही होगी।

सरकारी मनमानी का आलम यह है कि उसने कुछ पुस्तकों को पर्याप्त विचार-विमर्श किए बिना विवादास्पद मानकर प्रतिबन्ध लगा दिया और इस तरह उनको पाठकों तक पहुँचने से रोक दिया गया। सरकारी, स्वायत्त या निजी संस्थाओं द्वारा पिछले कुछ सालों में जिस तरह भारी-भरकम पुरस्कार बाँटे गए, उनमें अक्सर अपने खेमे के लोगों को उपकृत करने की कवायत अधिक नजर आती है। विडम्बना तो यह कि साहित्य जगत में लेखकों व आलोचकों की खेमेबन्दी जोर पकड़ती गई है और विभिन्न साहित्यिक अकादमियों व संस्थानों का काम इसी के अनुरूप प्रभावित हो रहा है। ऐसे हालात में कैसे उम्मीद की जा सकती है कि वे साहित्य-सृजन, लेखकों को पुरस्कार देने या साहित्य प्रकाशन को बढ़ावा देने के मामले में ईमानदारी से कार्य कर पाते होंगे? यही कारण है कि साहित्य की श्रेष्ठता के लिहाज से बहुत कम लेखक ही पुरस्कृत हो पाते हैं, अच्छे लेखक लेखन के प्रति हतोत्साहित होते हैं और इस सबका नतीजा अच्छी पुस्तकों के अभाव व पाठकों की कमी के रूप में सामने आता है।

एक जमाना था, जब आम हिन्दी पाठक साहित्य में रुचि न होते हुए भी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, निराला, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, यशपाल, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय आदि की पुस्तकों को बड़े चाव से पढ़ता था, लेकिन अब यह प्रवृत्ति नदारद सी है। लेखक व कवि अब प्रचार और पुरस्कार पाने की लालसा के साथ लेखन कार्य करने को प्राथमिकता दे रहे हैं, उनका नाता जनोपयोगी साहित्य सृजन से टूटता गया है। भारत की दूसरी भाषाओं में भी स्थितियाँ इससे बहुत ज्यादा अलग नहीं हैं। जब तक पुस्तकें उत्कृष्ट व जनोपयोगी लेखन से सराबोर, सस्ती और लेखकों की खेमेबंदी से दूर नहीं होंगी, तब तक वे पाठकों को अपनी तरफ आकर्षित नहीं कर सकतीं। कई प्रकाशक व लेखक सरकारी उदासीनता का रोना रोते हैं, लेकिन सिर्फ राज्याश्रय के बूते पर कोई भी साहित्य फल-फूल नहीं सकता। इसलिए, बेहतर होगा कि लेखक, प्रकाशक और सरकार तीनों मिलकर उत्कृष्ट साहित्य सृजन की दिशा में आगे बढ़ने के लिए गम्भीर विचार-विमर्श करें ताकि पाठक को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित किया जा सके।...

पुस्तकें छप रही हैं, मगर हो रहा ज्ञान का क्षरण

नई दिल्ली, (वार्ता) : पुस्तकें बड़ी संख्या में छप रही हैं लेकिन साहित्य और ज्ञान दम तोड़ रहा है। साहित्य के नोबल पुरस्कर विजेता सर विद्या एस० नायपाल और केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ० मुरलीमनोहर जोशी की यह एक जैसी चिन्ता है। प्रगति मैदान में आयोजित सोलहवें विश्व पुस्तक मेले के उद्घाटन के अवसर पर सर विद्या नायपाल ने कहा कि साहित्य समाज के बारे में एक नई समझ और अभिव्यक्ति देता है। लेकिन दुर्भाग्य है कि आज साहित्य अपनी जड़ों से उखड़ गया है। साहित्य का स्थान घटिया कथानक, जादू-टोना और ओझाई वाले लेखन ने ले लिया है। डॉ० जोशी ने सर विद्या की चिन्ता में स्वर मिलाते हुए कहा कि बाजार और मानव मस्तिष्क के संघर्ष में आज बाजार हावी हो रहा है। मार्केट की जगह सुपर मार्केट बन रही हैं, लेकिन मस्तिष्क की जगह परिष्कृत मस्तिष्क का निर्माण नहीं हो रहा है। विश्व साहित्य को अनेक कृतियाँ देने वाले सर विद्या ने कहा कि मैंने जिस परिवेश और आदर्शों के साथ लेखन किया था उसका महत्त्व कम हो रहा है। यह हताशा और बेबसी प्रकट करता है। ब्रिटेन के लेखकों चार्ल्स डिकेंस और रूडयार्ड किपलिंग के रचना संसार का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इन लेखकों के श्रोता सीमित थे। तकनीकी विकास के साथ पुस्तकों की बिक्री बढ़ी है और नए श्रोता तैयार हो रहे हैं। लेकिन बिक्री की नई-नई तरकीबों के बीच साहित्य मर रहा है उसे कोने में धकेल दिया गया है और उसका वजन कम हो रहा है। जेके रोलिंग के लोकप्रिय उपन्यास 'हैरी पीटर' की ओर संकेत करते हुए सर नायपाल ने कहा कि पाठकों के सामने आज साहित्य नहीं प्रेत की कहानियाँ और ओझा तांत्रिकों की बाजीगरी परोसी जा रही है। उन्होंने कहा कि वह आधुनिक लेखन के बारे में कोई फैसला नहीं सुना रहे हैं। वह अपनी यह चिन्ता व्यक्त करना चाहते हैं कि साहित्य को आज कोने में धकेल दिया गया है। पुस्तक लेखन के इतिहास की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि ताड़ के पत्तों पर लेखन से लेकर पुस्तकों ने सफलता के विभिन्न मुकाम तय किए हैं। पुस्तक मेलों का आयोजन पुस्तकों की सफलता की कहानी कहता है।

राजभवन में साहित्यिक अंत्याक्षरी

देशभर में टीवी चैनलों द्वारा प्रसारित फिल्मी गानों की अंत्याक्षरी की आँधी में परम्परागत साहित्यिक कविताओं की अंत्याक्षरी को विनष्ट होने से बचाने के लिए उत्तरांचल के राज्यपाल श्री सुदर्शन अग्रवाल की प्रेरणा से 14 फरवरी, 2004 को राजभवन में 'अंतर्विद्यालयीय साहित्यिक अंत्याक्षरी प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। प्रारम्भ में 'साहित्यिक अंत्याक्षरी' पुस्तक के प्रणेता डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी ने इस प्रकार की प्रतियोगिता की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। इस प्रतियोगिता में देहरादून के कुल 10 प्रतिष्ठित विद्यालयों के कक्षा-6 से 12 तक के बच्चों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में उच्चारण, पाठ-शैली और कविता के स्तर के आधार पर तीन टोलियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये। उत्तरांचल के शिक्षा मंत्री श्री नरेन्द्र भण्डारी ने पूरे उत्तरांचल में साहित्यिक अंत्याक्षरी कराने का संकल्प लिा। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी और मैथिली के सुप्रसिद्ध कवि डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र ने किया।

सम्पादक शिरोमणि

जीन्द - भारतीय साहित्यकार संघ के संयोजक एवं 'रवीन्द्र ज्योति' मासिक पत्र के सम्पादक **डॉ० केवलकृष्ण पाठक** को श्रीनाथद्वारा (राजस्थान) से पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह के अवसर पर साहित्य मण्डल द्वारा सम्पादक शिरोमणि की मानद उपाधि के साथ शाल, 'महाकवि परमानन्द' शीर्षक पुस्तक, रससिंगार अंक 1-2, वर्ष 7 का अंक, श्रीनाथजी का चित्र तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया है।

विश्व पुस्तक मेले में विश्वविद्यालय प्रकाशन के स्टॉल का दृश्य

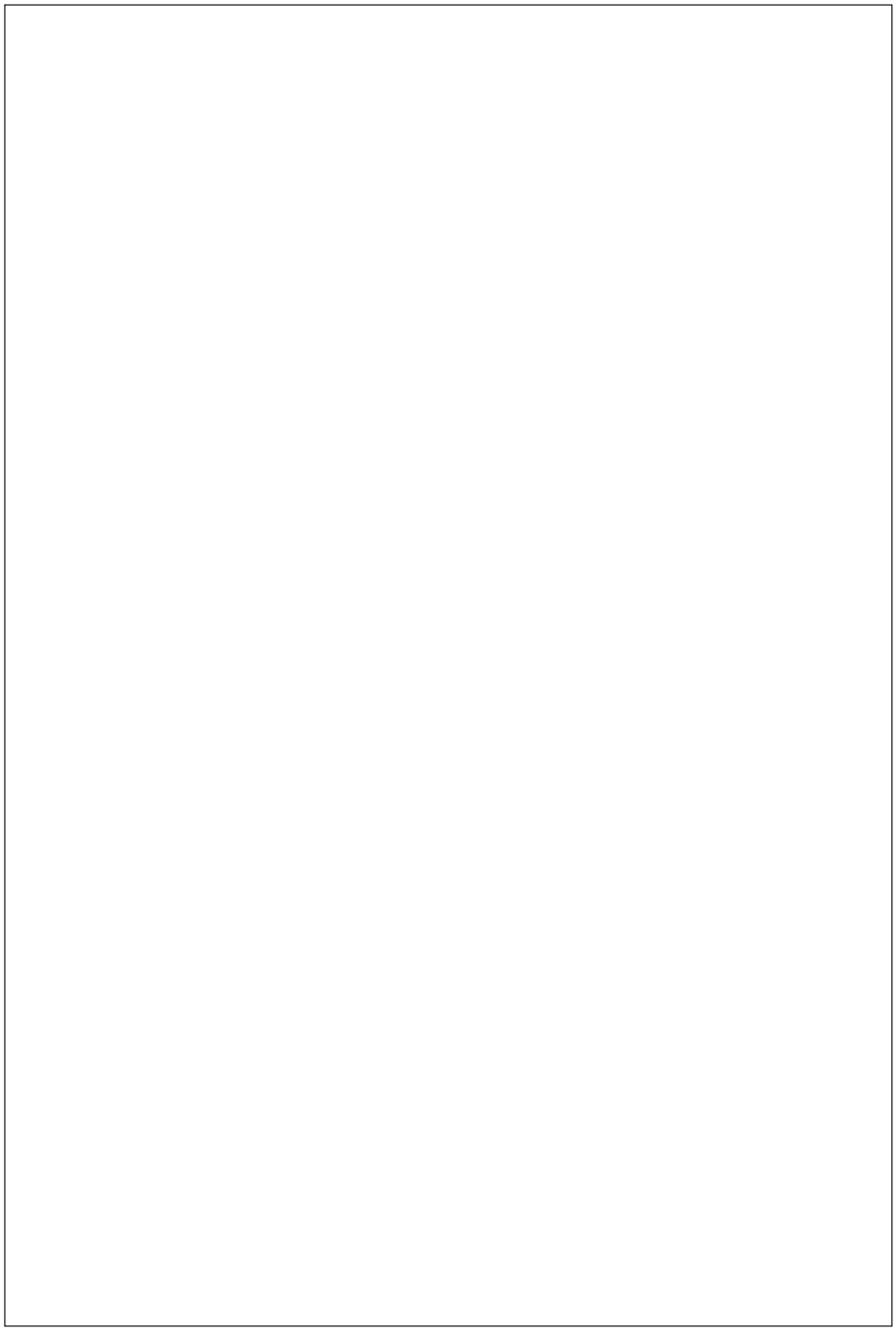

दर्शकों के विचार

अधिकृत और उपयोगी पुस्तकों का, और वह भी विविध विधाओं पर सुन्दर संकलन।

22.2.2004 **— त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी**
राज्यपाल, कनार्टक, बंगलोर

अत्यन्त दुर्लभ पुस्तकों का संगम।

— यू०सी० पाण्डेय
गो०ब०पं० कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर

अच्छा, सुरुचिपूर्ण प्रकाशन है, आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

— डॉ० नरेन्द्र मोहन, नई दिल्ली

विश्व पुस्तक मेले पर प्रतिक्रिया

सरकार की गलत पुस्तक नीति भी पाठकों की संख्या और उनकी रुचि को पुस्तकों से विमुख करने में बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। सच तो यह है कि हमारी सरकार की कोई पुस्तक-नीति ही नहीं है। हालांकि इस बाबत घोषणाएँ बार-बार की जाती हैं। देश के गाँव-गाँव में व्यापक रूप से पुस्तकालय स्थापित करने की योजना पर सरकार ने गम्भीरतापूर्वक कभी विचार और प्रयास ही नहीं किया। दूरदराज के क्षेत्रों में पुस्तक भेजने का एकमात्र साधन डाक व्यवस्था है। पहले हिन्दी में हर पॉकेट बुक्स प्रकाशक की एक घरेलू लाइब्रेरी योजना होती थी, जिसके द्वारा डाक के माध्यम से सस्ती पुस्तकें छोटे नगरों और गाँवों में भेजी जाती थी, किन्तु डाकदरों की अंधाधुंध बढ़ोत्तरी ने पॉकेट बुक्स आन्दोलन को बहुत हानि पहुँचाई।

पुस्तक मेले पुस्तकों का व्यापक प्रचार-प्रसार करने में सहायक होते हैं। लोगों में पुस्तकों के प्रति रुचि को भी बढ़ावा देते हैं, किन्तु ऐसे मेले तो बड़े-बड़े नगरों तक ही सीमित रहते हैं। करोड़ों की जनसंख्या जो पढ़-लिख गई है, जिसमें ज्ञान की पिपासा भी जागृत हो रही है, जो अच्छी पुस्तकें भी पढ़ना चाहती है, ऐसे मेले उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति उस समय तक सही ढंग से नहीं कर सकेंगे जब तक मन्तव्य के प्रति सही और सार्थक नीति नहीं अपनाई जाएगी। इस कार्य में सरकार का सक्रिय योगदान बहुत आवश्यक है। पुस्तकों के लिए डाक दर की नीति पर पुनर्विचार तुरन्त होना चाहिए।

— डॉ० महीप सिंह

2003-2004 में प्रकाशित प्रमुख ग्रन्थ

इतिहास-संस्कृति-कला

शिव काशी *डॉ० प्रतिभा सिंह* 400.00
काशी का इतिहास *डॉ० मोतीचन्द्र* 650.00
प्राचीन भारत में यक्ष पूजा *डॉ० कमलेश दूबे* 250.00
शिव की अनुग्रह मूर्तियाँ *डॉ० शान्तिस्वरूप सिन्हा* 250.00
आसन एवं योग मुद्राएँ *डॉ० रविन्द्रप्रताप सिंह* 250.00
प्राचीन भारतीय पुरातत्त्व, अभिलेख एवं मुद्राएँ *डॉ० नीहारिका* 200.00
भारतीय मुसलमान *डॉ० किशोरीशरणलाल* 60.00
सल्तनतकालीन सरकार तथा प्रशासनिक व्यवस्था *डॉ० ऊषारानी बंसल* 50.00
भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व *डॉ० व्रजवल्लभ द्विवेदी* 60.00
एक विश्व : एक संस्कृति *''* 350.00
Daishik Shastra *Badri Shah Thuldharia* 250.00
भारतीय समाज एवं संस्कृति : परिवर्तन की चुनौती *सं० सत्यप्रकाश मित्तल* 380.00

अध्यात्म, योग, तंत्र साधना, धर्म दर्शन

साधना और सिद्धि *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 250.00
गोपीगीत *अनन्तश्री स्वामी करपात्रीजी महाराज* 200.00
भारतीय दर्शन : सामान्य परिचय *डॉ० व्रजवल्लभ द्विवेदी* 60.00
सुखी जीवन : कैसे ? *डॉ० लल्लनप्रसाद पाण्डेय* 90.00
Yogirajadhiraj Swami Vishuddhanand Paramahansdeva : Life & Philosophy *Nand Lal Gupta* 400.00

होली पर विशेष

साहित्यकार हास्य प्रसंग

आलोचक और गधा

एक दिन नामवर आलोचक अपने चेलों के साथ कहीं जा रहे थे।

सामने से एक गधा आ रहा था। नामवर आलोचक को देखकर वह रुका। फिर उसने उनके चेहरे को गौर से देखा और पूछा, ''क्या आप ही आलोचक प्रवर हैं?''

पहले तो एक गधे द्वारा इस तरह जिज्ञासा व्यक्त किये जाने पर आलोचकजी अपने चेलों के सामने सकुचाये, मगर थोड़ी ही देर में उन्होंने अपने चेहरे पर जबर्दस्ती प्रसन्नता का भाव लाते हुए कहा, ''देखो चेलो, मेरी लोकप्रियता कितनी बढ़ गइ है कि अब तो पशु-जगत के प्राणी भी मुझे पहचानने लगे हैं।''

गधे ने कहा, ''पशु-जगत के प्राणी नहीं सिर्फ गधे। बात यह है कि आजकल गधे अक्सर आपकी ही चर्चा करते हैं। वे कहते हैं कि ऐसा जो गधों और घोड़ों में कोई फर्क नहीं करता। हिन्दी में एक ही आलोचक हैं जो आज भी दुनिया से गैरबराबरी खत्म करने में लगा हुआ हे। आपको मेरा नमस्कार।'' इतना कहकर गधा तो चल दिया मगर आलोचकजी ठिठक गये।

पेरिस में अशोक वाजपेयी

दुनिया घूमते-घामते हाल ही में अशोक वाजपेयी पेरिस पहुँचे।

हवाई-अड्े पर उनके स्वागत के लिए अनेक लोग तख्तियाँ लिये खड़े थे, जिन पर लिखा था—''हिन्दी में लिखनेवाले फ्रांसीसी कवि उदयन वाजपेयी के भाई का पेरिस में स्वागत है।''

भाई का मामला था इसलिए अशोकजी कड़वा घूँट पीकर रह गये और उन्होंने बुरा नहीं माना। उन्होंने एक स्वागतकर्ता से हाथ मिलाते हुए कहा, ''मैं हिन्दी का महान कवि और आलोचक अशोक वाजपेयी हूँ।''

जवाब में स्वागतकर्ता ने कुछ रूखेपन से कहा, ''हमें इससे मतलब नहीं कि आप हिन्दी के महान कवि और आलोचक अशोक वाजपेयी हैं। हमें तो आप सिर्फ यह बताइए कि आप उदयन वाजपेयी के भाई हैं या नहीं हैं, अगर हैं तो आपका पेरिस में स्वागत है।''

इस पर फिर अशोक वाजपेयी मुस्कुराये और उन्होंने विनम्रतापूर्वक कहा, ''हाँ मैं ही उदयन वाजपेयी का भाई हूँ, मगर दरअसल भारत में लोग उदयन वाजपेयी को ही मेरे भाई के रूप में जानते हैं।''

स्वागतकर्ता ने अशोक वाजपेयी की ओर व्यंग्य से मुस्कुराते हुए कहा, ''यह भारत नहीं जनाब फ्रांस है और आप उसकी राजधानी पेरिस में हैं।''

राजेन्द्र यादव और उनका प्रशंसक

एक बार राजेन्द्र यादव का एक प्रशंसक दिल्ली आया। 'हंस' कार्यालय में जाकर उसने देखा कि वहाँ एक आदमी काला चश्मा लगाये चुपचाप बैठा कहानियाँ पढ़ रहा है।

प्रशंसक चौंका। उसने पूछा, ''क्या यही 'हंस' का कार्यालय है?''

कहानी पढ़नेवाले आदमी ने उस आदमी को देखा और जवाब दिया, ''जी हाँ।''

फिर उसने पूछा, ''तो राजेन्द्र यादव कहाँ हैं?''

उस आदमी ने जवाब दिया, ''मैं ही राजेन्द्र यादव हूँ।''

प्रशंसक ने कहा, ''मुझे नहीं लगता कि यह 'हंस' का कार्यालय है और आप राजेन्द्र यादव हैं।''

यह सुनकर राजेन्द्र यादव की आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं और उन्होंने कहा, ''आपको यह शक कैसे हो रहा है कि यह 'हंस' का कार्यालय नहीं है और मैं राजेन्द्र यादव नहीं हूँ? आज तक तो किसी को इसमें शक नहीं हुआ?''

उसने कहा, ''मुझे बताया गया था कि जहाँ दिनभर ठहाके लगते हों, चुटकुलेबाजी चलती रहती हो, पर-निंदा होती रहती हो, जहाँ उठाने-गिराने के खेल चलते रहते हों, समझो वही जगह 'हंस' का कार्यालय है और जिसके ठहाकों का शोर सबसे ज्यादा सुनाई देता हो और जो चुटकुलेबाजी का उस्ताद हो, उसे राजेन्द्र यादव समझना। इस लिहाज से न तो यह 'हंस' का कार्यालय हुआ और न ही आप राजेन्द्र यादव हुए। लगता है दिल्ली में अब नकली 'हंस' और नकली राजेन्द्र यादव भी होने लगे हैं।''

इतना कहकर वह आदमी तेजी से बाहर निकल गया। पीछे से राजेन्द्र यादव उसे आवाज देते रहे, मगर उसने एक न सुनी।

'*कादम्बिनी*' से

आपका पत्र

6 मास मारीशस में व्यतीत कर जब स्वदेश लौटा तो 'भारतीय वाङ्मय' के 6 अंक तत्परतापूर्वक पढ़े। इस पत्र में हिन्दी तथा अन्यत्र प्रकाशित नवीनतम साहित्य की अधुनातन जानकारी रहती है। साथ ही हिन्दी के प्रचार-प्रसार विषयक समस्याओं की भी पूरी विवेचना आप देते हैं। आपके अग्रलेख तो सचमुच बोधप्रद तथा प्रेरणादायक होते हैं। आज की नई पीढ़ी में पठन पाठक का जैसा ह्रास हुआ है, वह सचमुच दुखद है मुझे याद है कि हम लोग प्राइमरी तथा मिडिल तक आते-आते प्रेमचंद, प्रसाद, जैनेन्द्र के लेखन से परिचित हो जाते थे। 'भारत भारती' तथा 'जयद्रथ वध' की पंक्तियाँ हमारे स्मृतिपत्र में सदा रहती थीं। आज तो सम्भवत: महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के हिन्दी प्राध्यापक भी भारतेन्दु तथा द्विवेदी काल के साहित्यकारों के बारे में अपेक्षित जानकारी नहीं रखते। सुधा, माधुरी, सरस्वती, विशाल भारत और हंस से आज कितने लोग परिचित हैं। 'चाँद' ने सामाजिक क्रान्ति की जो लहर उत्पन्न की थी, उसने तत्कालीन हिन्दीभाषी मध्यम वर्ग को किस प्रकार प्रभावित किया था, यह आज का कौन-सा समाजशास्त्री जानता है? लिखा तो बहुत जा रहा है किन्तु अतीत के मुक्ताकणों की रक्षा कैसे होगी, यह बताना कठिन है। **— डॉ० भवानीलाल भारतीय**

अवकाशप्राप्त प्रोफेसर, दयानन्द शोधपीठ
पंजाब विश्वविद्यालय

'भारतीय वाङ्मय' का हर अंक संग्रहणीय और मनभावन है; प्रकाशन-जगत् के लिए वातायन है। पत्र इतना ज्ञानवर्द्धक और दिशा-दर्शक है कि सभी परिजनों को इसकी आतुर प्रतीक्षा रहती है।

— डॉ० भगवानशरण भारद्वाज, बरेली

देशभर के साहित्यिक समाचारों को 8 पन्नों में समेटकर आप अच्छा कार्य कर रहे हैं। दरअसल रचनाकार अपने सृजन में इतना व्यस्त रहता है कि उसे पड़ोस में देखने तक की फुर्सत नहीं रहती, ऐसे में यह समाचार पत्रिकाएँ बहुत सहयोगी सिद्ध होती हैं।

भाषा के सम्बन्ध में आपके विचारों से मैं सहमत हूँ। **— बद्रवास्ती,** भोपाल

'भारतीय वाङ्मय' का दिसम्बर अंक पढ़ डाला। 'स्वाध्याय' जैसे सम्पादकीय पढ़ लेने पर कौन पुस्तकें पढ़ने और खरीदने की ओर प्रेरित न होगा। अन्य सूचनाएँ, वक्तव्य सभी इस पत्रिका को रुचिकर बनाते हैं। **— डॉ० यशपाल वैद्य,** अम्बाला शहर

यह पत्रिका मैंने पहले नहीं देखी थी। देख कर अच्छा लगा कि यह प्रकाशकीय सूचीपत्र मात्र नहीं है, साहित्यिक संवादों की पत्रिका है। इससे सूचनाएँ भी मिलती हैं, पुस्तकों का परिचय भी प्राप्त होता है।

— सिद्धनाथ कुमार
राँची

'भारतीय वाङ्मय' का फरवरी 2004 अंक पूर्व की तरह ढेरों साहित्यिक जानकारियों से पूर्ण और एक और जानकारी 'बिहार की अन्य भाषा' लेकिन एक निवेदन है कि इसमें जो जानकारी दी गई है, वह अधूरी और तथ्य के विपरीत है। बिहार तीन महाजनपदों का नाम है—अंग, मगध ओर बज्जि। इन जनपदों की भाषाएँ अंगिका, मगही और बज्जिका हैं। मैथिली नेपाल की द्वितीय राजभाषा रही है, जो इस बात का संकेत है कि यह अपने स्वरूप में नेपाली भाषा के करीब है। धीरेन्द्र वर्मा, धर्मवीर भारती, रामस्वरूप चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित 'हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1' में मैथिली दरभंगा के आसपास की बोली कही गई है जबकि अंग प्रदेश उत्तर में कोशी की सीमा को छूती हुई वर्तमान झारखण्ड के मध्य क्षेत्र पर विस्तृत है, जिसकी भाषा ही अंगिका कहलाती है। इस सम्बन्ध में राहुल सांकृत्यायन की पुस्तक 'आज की समस्याएँ' द्रष्टव्य हैं। हिन्दी के प्रथम कवि सरहपाद अंगिका भाषा के ही आदि कवि हैं, इसे राहुलजी ने भी स्वीकार किया है। बौद्ध ग्रन्थ 'ललितविस्तर' की लिपि शाखा में अंगिका लिपि चौथे स्थान पर है। हस्तलिपियों में अंगिका की यह स्थिति अंगिका के महत्त्व को निर्धारित करती है।

— डॉ० अमरेन्द्र, भागलपुर

समाचार

निदेशक, हिन्दी संस्थान

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के निदेशक पद पर कैप्टन एस०के० द्विवेदी की नियुक्ति हुई है।

हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा आयोजित निराला साहित्य पर्व-3 में

निराला ऐसे कवि थे जिनकी कविता इतिहास की गति को ठेल कर भविष्य को खोजती और आगत इतिहास की आहट सुनते हुए नए रास्तों का संधान करती है। **—भगवत रावत**

निराला काव्य निर्झर का एक अजस्र स्रोत है। राह में आए अवरोधों से टकराती, अनिवार बहती एक वेगवती काव्य धारा का दूसरा नाम निराला है। निराला का काव्य वैभव और उनके काव्य व्यक्तित्व का चरम उत्कर्ष इसमें है कि वे हिन्दी में आधुनिकता के जितने रचनात्मक आयाम हो सकते हैं और जितने प्रतिमान हो सकते हैं वे उन सबके बीच आदर्श बन गए हैं दूसरे अर्थों में वे एक काव्य-संस्थान हैं। निराला से लेकर नयी कविता ओर नयी कविता के समानांतर चलने वाली प्रगतिशील काव्य धारा तक की काव्य यात्रा एक विशिष्ट सौन्दर्य-बोध की कविता है ओर उसके बाद से लेकर आज 2004 तक की कविता जिसे कहने के आदी हो चले हैं—यह कविता अपने में एकदम अलग है यथार्थ के बोझ से आक्रांत अलग काट की कविता है जिसका अवसाद लेने के लिए हमें फिर एक नया शास्त्र गढ़ना होगा। स्त्री विमर्श और दलित विमर्श हिदी कविता के आधुनिक परिदृश्य में बहुत तेजी के साथ उभरकर सामने आए हैं। इन विमर्शों की अनदेखी नहीं की जा सकती। **—डॉ० गोविन्दप्रसाद**

निराला कविता में विचार की उपस्थिति और चिंतनशीलता पर बल देते हैं। वे कविता को अनेक प्रकार के बन्धनों से मुक्ति चाहने वाले अपने दौर के कवियों में एक थे। **—डॉ० सत्यप्रकाश मिश्र**

आज की कविता नायकों से मुक्त कविता है। यह साधारण मनुष्य की केन्द्रियता की कविता है। इस कविता ने परम्परा का विस्तार भी किया है ओर उसका पुनराविष्कार भी। आज की कविता में हिन्दी-उर्दू का भेद मिट गया है। इधर के कवियों की कविता में बोलियों के ऐसे शब्द आते हैं जो पहले खड़ी बोली में प्रवेश नहीं करते थे। हमारी कविता में अब कई बोलियाँ बोलती हैं। इसलिए कविता की भाषा ही नहीं भूगोल का भी विस्तार हुआ है। **—अशोक वाजपेयी**

लघु पत्रिकाएँ दूर तक मार करती हैं : नासिरा

लघु पत्रिकाएँ आकार में बेशक छोटी होती हैं लेकिन दूर तक मार करने वाली। यही नहीं अपने समय के जरूरी सवाल को उठाते हुए आग उगलती हैं। लघु पत्रिकाओं का महत्त्व इस अर्थ में भी है कि समकालीन रचनाशीलता खासकर दूर-दराज स्थित हाशिए में लेखकों के स्वर को भी एक सार्थक मंच प्रदान करती हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय के इन्द्रप्रस्थ कॉलेज में हिन्दी विभाग द्वारा डॉ० साधना अग्रवाल के सौजन्य से आयोजित दो दिवसीय वृहत्त लघु पत्रिका प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि प्रख्यात लेखिका नासिरा शर्मा ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा।

इस प्रदर्शनी में हिन्दी की लगभग 200 पत्रिकाएँ जिनमें कुछ दुर्लभ पत्रिकाएँ और ऐसी पत्रिकाएँ भी शामिल थीं जिनमें संयोजिका की रचनाएँ छपी थी, प्रदर्शित की गई। तीन खण्डों में आयोजित यह प्रदर्शनी महाविद्यालय परिसर में लगाई गई थी।

'मामूली चीज़ों का देवता' का लोकार्पण

विश्वप्रसिद्ध लेखिका और सामाजिक कार्यकर्ता अरुंधति राय के बुकर पुरस्कार प्राप्त उपन्यास 'गॉड ऑफ़ स्माल थिंग्स' के हिन्दी अनुवाद 'मामूली चीज़ों का देवता' का लोकार्पण दिल्ली के त्रिवेणी सभागार में 7 फरवरी, 2004 को विख्यात कथाकार कृष्णा सोबती ने किया। दुनिया की चालीस से भी ज्यादा भाषाओं में अनूदित इस उपन्यास के इस हिन्दी संस्करण को राजकमल प्रकाशन ने प्रकाशित किया है।

अपने वक्तव्य में कृष्णा सोबती ने अरुंधति राय को अपनी पीढ़ी की अप्रतिम प्रतिभा बताते हुए कहा कि हिन्दी समाज इस अनुवाद के माध्यम से अपने परिवार में उनका स्वागत करता है। हिन्दी साहित्य जगत की बौद्धिकता का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय संवेदना को अंग्रेजी में गहरे से अभिव्यक्त करने वाली इस किताब को व्यापक तौर पर स्वीकार किया जाएगा।

कार्यक्रम का संचालन राजकमल प्रकाशन के प्रबन्ध निदेशक अशोक माहेश्वरी ने किया। कार्यक्रम के आरम्भ में उन्होंने सभी आगन्तुकों का स्वागत करते हुए अपने इस नए प्रकाशन के महत्त्व को रेखांकित किया।

'गोदान' के अनुवाद से तृप्ति मिली : मरियोला आफरीदी

वेनिस विश्वविद्यालय इटली में हिन्दी की वरिष्ठ प्राध्यापिका एवं हिन्दी साहित्य की निरन्तर अनुवाद करने वाली विदुषी प्रो० मरियोला आफरीदी ने प्रेमचंद साहित्य संस्थान की ओर से निराला निवेश में आयोजित सम्मान समारोह में कहा कि मैंने बहुत सारे अनुवाद किये। लेकिन, जो तृप्ति 'गोदान' के अनुवाद में मिली, वैसी कभी नहीं मिली।

इटली में प्रेमचंद, अज्ञेय, मुक्तिबोध, धूमिल, रेणु, मोहन राकेश आदि के साहित्य के अनुवाद हो चुके हैं। अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ आलोचक डॉ० बच्चन सिंह ने प्रो० आफरीदी के कार्य की सराहना करते हुए संत गोरखनाथ पर उनके कार्य को हिन्दी में लाने का आग्रह किया। कार्यक्रम में डॉ० अनुराधा बनर्जी, डॉ० अवधेश प्रधान, डॉ० राम सुधार सिंह, डॉ० शैलेन्द्र, प्रो० बलराज पाण्डेय, डॉ० सदानंद शाही, कमल गुप्त आदि उपस्थित रहे।

भारतीय हिन्दी परिषद तथा भारतीय भाषा परिषद

द्वारा

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा का सम्मान

कलकत्ता विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष, जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं भारतीय हिन्दी परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रो० कल्याणमल लोढ़ा को दोनों संस्थाओं के तत्त्वावधान में सारस्वत साधना के लिए शनिवार 14 फरवरी, 2004 को कोलकाता के भारतीय भाषा परिषद के सभागार में सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह का उद्घाटन लोढ़ाजी के पूर्व शिष्य उत्तर प्रदेश के राज्यपाल आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री ने किया, अध्यक्षता आचार्य सिद्धेश्वरप्रसाद ने की। इस अवसर पर डॉ० आशीष सान्याल और डॉ० शंभुनाथ ने प्रो० लोढ़ा के व्यक्तित्व और कृतित्व के सन्दर्भ में उनके साहित्यिक अवदान एवं प्रशासनिक कार्यों की सराहना की।

प्रो० लोढ़ा ने आभार व्यक्त करते हुए कहा—जोधपुर मेरी जन्मभूमि है, इलाहाबाद मेरी मानस भूमि है जहाँ डॉ० धीरेन्द्र वर्मा के सान्निध्य में साहित्य दीक्षा ली, कर्मभूमि कलकत्ता है।

इस सारस्वत समारोह के अवसर पर दो गोष्ठियाँ हुईं। 14 फरवरी को स्त्री विमर्श संगोष्ठी हुई, प्रभा खेतान ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। चित्रा मुद्गल, श्रीमती ममता कालिया, पुष्पलता तनेजा ने भाग लिया। दूसरे दिन 15 फरवरी को प्रातः सत्र में नवनीता सेन ने बीज भाषण प्रस्तुत किया, वक्ताओं में मुख्य थे रवीन्द्र कालिया तथा डॉ० अमरनाथ। अपराह्न सत्र में डॉ० सत्यप्रकाश मिश्र ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। वक्ता थे—सुकीर्ति गुप्ता, इन्दु जोशी और उमाकांत खुवालकर।

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा ने कहा—आज जीवन शैली और विचार बदल रहे हैं। हमें विवेचक दृष्टि से देखना और निर्णय लेना चाहिए कि समाज के निर्माण के लिए क्या हितकर है। आज मूल्यों का संकट है।

भारतीय हिन्दी परिषद् के अध्यक्ष प्रो० रामकमल राय ने कहा—स्त्री समस्या पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए तभी पुरुष प्रधान समाज में स्त्री को सम्मान, प्रतिष्ठा और स्वतंत्रता मिल सकेगी

त्रिवेणी प्रयाग से गंगासागर कलकत्ता के सम्मिलित सारस्वत समारोह में लगभग दो सौ सहभागी उपस्थित हुए।

इस वर्ष एनबीटी द्वारा पुस्तकों के स्टॉलों पर लोकार्पण तथा लेखकों से भेंट जैसे कार्यक्रमों पर प्रतिबन्ध लगा दिया जिस कारण इस बार मेले में पुस्तक प्रेमियों की संख्या कम हुई है।

पहले मिले-जुले स्टॉल होने के कारण भी पुस्तक प्रेमी मेले में घूमते थे लेकिन इस बार अंग्रेजी प्रकाशक अलग, हिन्दी प्रकाशक अलग, बाल मंडल अलग, विदेशी प्रकाशकों को अलग कर दिया गया है जिस कारण पुस्तक प्रेमी एक हॉल से ही वापस चले जाते थे।

पुस्तक परिचय

स्वामी दयानन्द सरस्वती सम-सामयिक पत्रों में

डॉ० भवानीलाल भारतीय

प्रकाशक : दयानन्द अध्ययन संस्थान
8/423, नन्दन वन, जोधपुर
मूल्य : 100 रुपये

1875 में स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की। उन्होंने अनुभव किया कि आर्य समाज के उद्देश्यों के प्रचार-प्रसार के लिए पत्र-पत्रिका महत्त्वपूर्ण साधन है। स्वामी दयानन्द ने समकालीन पत्रों को अपने विचारों के प्रचार-प्रसार का माध्यम बनाने के साथ लोगों को आर्य समाज के सिद्धान्तों के अन्तर्गत पत्र-पत्रिका निकालने के लिए प्रेरित किया इसी सन्दर्भ में 1878 में शाहजहाँपुर से 'आर्य दर्पण', काशी से 'आर्य मित्र', फर्रूखाबाद से मासिक 'भारत सुदशा प्रवर्त्तक' (जुलाई 1879), अजमेर से मासिक 'देश हितैषी' (1882), मेरठ से उर्दू साप्ताहिक 'आर्य समाचार', लाहौर से अंग्रेजी मासिक 'दि आर्य मैगज़ीन' (मार्च 1882) पत्र-पत्रिका प्रकाशित हुए। ये पत्र मुख्य रूप से स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के समाज सुधार तथा सिद्धान्तों पर सामग्री प्रदर्शित करते थे। देश के अन्य पत्र-पत्रिकाओं में भी आर्य समाज की गतिविधि की समीक्षा प्रकाशित होती रहती थी। समीक्षा का स्वरूप समर्थन और विरोध दोनों ही होता था। सभी पत्रों ने देश में 'आर्य समाज' की चेतना प्रसारित करने में महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

भाषा, साहित्य तथा सामाजिक चेतना के क्षेत्र में भारतेन्दु ने पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जो किया, स्वामी दयानन्द प्रेरित आर्य-पत्रिकाओं ने समाज सुधार की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

डॉ० भवानीलाल भारतीय ने इस पुस्तक में स्वामी दयानन्द की जीवन यात्रा के तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित प्रमुख प्रसंगों का उल्लेख किया है, जिससे तत्कालीन पत्रकारिता की विचारधारा ज्ञात होती है। यह पुस्तक पत्रकारिता तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती के संदर्भ में संग्रहणीय है।

लोकभारती हिन्दी प्रयोग कोश

सम्पादक : **डॉ० बदरीनाथ कपूर**

प्रकाशक
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
मूल्य : 200 रुपये

डॉ० कपूर खानदानी कोशकार हैं। इनके मामा बाबू रामचन्द्र वर्मा हिन्दी के प्रसिद्ध कोश हिन्दी शब्द सागर के सम्पादकों में थे। उनका सम्पूर्ण जीवन शब्द, अर्थ, व्याकरण एवं भाषा प्रयोगों पर लगा था। डॉ० कपूर ने भाषा का कार्य उनसे ही सीखा है। उसके बाद इनका अपना भी अनुभव है। प्रत्येक क्षण भाषा प्रयोगों के अनुभव ने इन्हें विशिष्टता प्रदान की है। व्याकरण, कोश एवं भाषा प्रयोग इन तीन क्षेत्रों में कपूर का विशिष्ट कार्य है। इन्हीं में शामिल है पारिभाषिक एवं पर्यायवाची का अध्ययन। मुहावरे और लोकोक्तियों के अध्ययन को भी प्रयोग में रखना चाहिए। डॉ० कपूर ने इन सभी क्षेत्रों में कार्य किया है।

हिन्दी प्रयोगों पर लिखनेवाले वे हिन्दी के एकमात्र लेखक हैं। ऐसे तो उनका क्षेत्र ही निराला है। कथा साहित्य के दौर में भाषा पर दो एक व्यक्ति ही लिख रहे हैं। भाषा किसी भी समाज की अभिव्यक्ति का शरीर है। आत्मा है। प्रयोग में मुख्यत: भाषा की आत्मा का विश्लेषण है। विश्लेषण द्वारा बताया गया है कि भाषा प्रयोगों को समझें। तदनुसार उनका प्रयोग करें। पुराने विद्वानों ने भाषा में शब्दों की तीन शक्तियाँ अमिधा, लक्षणा और व्यंजना मानी हैं। किन्तु इनसे आगे एक तात्पर्यावृत्ति का उल्लेख किया है। तात्पर्यावृत्ति ही भाषा को ठीक-ठीक समझाती है। लेखक या वक्ता के कथन का तात्पर्य क्या है? वह शब्दों द्वारा क्या कहना चाहता है? प्रयोग कोश भाषा के तात्पर्य को समझाने का विज्ञान है। शब्दों का प्रयोग क्यों, कैसे और किन अर्थों में होता है? यह अत्यन्त सूक्ष्म विज्ञान है। एक ही शब्द अलग-अलग स्थानों पर कैसा अर्थ देता है? प्रयोग का यह विश्लेषण लेखक और पाठक दोनों के लिये उपयोगी है।

नित्य प्रयोगशील भाषा नित्य विकास की ओर है। इस विकास ने उन्हें नये-नये प्रयोगों का विस्तृत क्षेत्र प्रदान किया है। इसके लिए सावधानी भी आवश्यक है। असावधान लेखक या प्रयोक्ता भ्रामक प्रयोग कर पाठक को भ्रम में रखता है। प्रयोग कोश भाषा प्रयोग की विकृतियों को निराकृत करता है। खड़ी बोली हिन्दी ही इस समय प्रयोग की भाषा है। जो लोग केवल खड़ी बोली के ही प्रयोक्ता हैं, उनके लिये इस कोश का विशेष महत्त्व है। खड़ी बोली हिन्दी प्रान्त से राष्ट्र और राष्ट्र से अन्तर्राष्ट्र की ओर अग्रसर है। खड़ी बोली न केवल घर बल्कि अत्यन्त विस्तृत क्षेत्र की भाषा है। विस्तृत क्षेत्र में भाषा का विस्तार है। इस विस्तार को समझने के लिये प्रयोगों को समझना आवश्यक है। डॉ० कपूर के प्रयोग सम्बन्धी अधिकतर उदाहरण किताबों के न होकर बोलचाल के हैं। यद्यपि उन्हें किताबों से भी परहेज नहीं है। क्योंकि किताबें भी तो भाषा के नित्य नूतन प्रयोग कर रही हैं। दूर-दूर तक फैले पाठकों के समझ किताबें ही तो हैं।

डॉ० कपूर गलतियाँ न बताकर गलतियाँ न हों इसका ध्यान रखते हैं। गलत बताने की अपेक्षा अच्छा क्या है, यह बताना अधिक उपयोगी है। शब्दार्थ प्रयोगों का सूक्ष्म, किन्तु सुस्पष्ट रूप उपस्थित करना आवश्यक है। 'अन्त' का उदाहरण देखें— यह शब्द तत्सम भी है और तद्भव भी। तत्सम रूप में इसके अर्थ हैं—समाप्ति, नाश, मृत्यु, परिणाम आदि और तद्भव (सं अंतस्) रूप में यह अंत:करण (या हृदय) रहस्य (या भेद) आदि का सूचक है। दूसरा शब्द देखें—पूर्वीय ही शुद्ध है, पौर्वात्य अशुद्ध है और पाश्चात्य के अनुकरण पर गढ़ा हुआ शब्द है। पूर्वीय का विपर्याय पाश्चात्य है। इसमें 'पूर्वी' पर भी विचार आवश्यक था क्योंकि आजकल पूर्वीय की अपेक्षा पूर्वी का प्रयोग अधिक हो रहा है। 'पूर्वी' हिन्दी की दृष्टि से उचित जान पड़ता है। 'य' योग संस्कृत है। 'य' का अभाव हिन्दी में है। इसी प्रकार पश्चिमीय की अपेक्षा पश्चिमी प्रयोग हो रहा है।

लेखक ने क्रियाओं, मुहावरों, विशेषणों आदि पर भी विचार किया है। पुस्तक उपयोगी है। हिन्दी की उच्च शिक्षा में इसे पाठ्य ग्रन्थ के रूप में रखना चाहिए। खड़ी बोली ही राजभाषा बनेगी। तब के लिये यह ग्रन्थ उपयोगी होगा। लेखक को इस कार्य को और भी आगे बढ़ाना चाहिए। बहुत से लेखक अशुद्ध लिखते हैं। उनको इस पुस्तक से सीखना चाहिए। प्राकट्य एवं प्रागट्य में लेखकों का दोष बताया गया है। प्रागट्य बिल्कुल ही अशुद्ध है। इसी तरह पूर्वग्रह की अपेक्षा पूर्वाग्रह अधिक चल रहा है। लेखक ने इसकी ओर संकेत कर पुस्तक को उपयोगी बनाया है।

— डॉ० युगेश्वर

केशवशरण की काव्य कृतियाँ

केशवशरण काशी के युवा कवि हैं। 2003 में उनके एक के बाद एक तीन कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं—

कड़ी धूप में यह हाइकु कविता का संग्रह है। क्षण को पंक्तिबद्ध करती तीन पंक्तियों में अर्थवता के साथ कितनी संवेदना है।

आया न चाँद
गिन-गिन के तारे
मैं सो गया हूँ

शैल उठा लूँ
बस जरा सा फूल
हाथ लगा दे

जिधर खुला व्योम है केशवशरण ने अपने इस कविता संग्रह में जीवन के अनुभव, घटना, दृश्य और विचार को प्रभावशाली रूप में चित्रित किया है। गहरा रागात्मक बोध, प्रकृति प्रेम, लयात्मक भाषा इनकी मुक्त छंदीय कविताओं को भी एक प्रगीतात्मक स्वरूप प्रदान करते हैं।

दर्द के खेत में (गजल संग्रह) कम से कम शब्दों और बोलचाल की भाषा में जीवनानुभवों और अनुभूतियों को सहजता और सफाई से अभिव्यक्त करती गजल कवि के बहुआयामी व्यक्तित्व की परिचायक है। इनमें कितनी मार्मिकता है—

और तीखी लगेगी धूप तुझे
याद करता है चाँदनी को क्यों
ख़्वाब हर एक सच नहीं होता
भूल जाता है तू इसी को क्यों?

कड़ी धूप में 75.00
जिधर खुला व्याम होता है 100.00
दर्द के खेत में 75.00
प्रकाशक : प्रगीत प्रकाशन
एस 2/564, सिकरौल, वाराणसी-221 002

पृष्ठ 1 का शेष

सुव्यवस्थित योजना के अन्तर्गत स्थापित पुस्तकालयों को समृद्ध होने में देर नहीं लगेगी—यदि इनमें अपेक्षित सुविधा साधन हुए। आज लोगों के छोटे घरों में पुस्तकें रखने की जगह नहीं रह गई, वे चाहते हैं कि अतिरिक्त पुस्तकें वे किसी ऐसे पुस्तकालय को दें जो उनका सही उपयोग कर सकें। इतना ही नहीं कितने वयोवृद्ध विद्वान तथा अध्येता हैं जिनके वंशजों की पुस्तकों में कोई रुचि नहीं, उनके निजी पुस्तकालय में विशिष्ट ग्रन्थों का संग्रह है। वे चाहते हैं कि उनका पुस्तकालय किसी ऐसे बड़े पुस्तकालय को दे दिया जाय जहाँ उनकी सुरक्षा हो सके। कितने महानुभावों ने अपने पुस्तकालय शिक्षा संस्थाओं को दिये, वहाँ पुस्तकें ढेर हो गई, न उनको सूचीबद्ध किया गया, न वे पाठकों को सुलभ करायी जा सकीं। इस दृष्टि से भी पुस्तकालय की स्थापना करते समय विचार करना चाहिए।

आज एलेक्ट्रॉनिक साधनों से पुस्तकालयों को सरलता से सूचना सम्पन्न बनाया जा सकता है। देश के प्रमुख पुस्तकालयों को इंटरनेट के माध्यम से जानकारी का आदान-प्रदान कराया जा सकता है। पुस्तकालयों के महत्त्व को समझें, लोगों के पठन-पाठन की रुचि जागृत करें। स्वाध्याय के ये एकमात्र साधन हैं जो देश के बौद्धिक विकास के प्रमुख माध्यम हैं। समस्त संस्कृतियों के मूल में स्थित है पुस्तकालय संस्कृति।

— पुरुषोत्तमदास मोदी

'भारतीय वाङ्मय' एक झरोखा है जिससे साहित्य, साहित्यकार, भाषा, समारोह, प्रकाशन तथा इनसे सम्बन्धित इतर सूचनाएँ उपलब्ध होती रहती हैं।

प्रथम पृष्ठ पर आपकी टिप्पणी सदैव विचारोत्तेजक होती है, इस बार आपने मेरे मन की बात कह दी। नये प्रकाशनों की सूचना जानने की इच्छा रहते हुए नहीं प्राप्त की जा सकती। किसी प्रकाशक से इसकी अपेक्षा नहीं की जा सकती। राष्ट्रीय पुस्तकालय या सार्वजनिक संस्थान ही यह सूचना लागत मूल्य पर उपलब्ध करा सकते हैं। आपका सुझाव बड़ा उपयोगी और व्यावहारिक है। काश, किसी के कान पर जूँ रेंगती।

— डॉ० शैलनाथ चतुर्वेदी
53, खुर्शेदबाग, लखनऊ

फार्म-4 नियम 8 के अन्तर्गत अपेक्षित 'भारतीय वाङ्मय' नामक पत्रिका से सम्बन्धित स्वामित्व और अन्य बातों का विवरण

प्रकाशन का स्थान	:	विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी-221 001
प्रकाशन की आवर्तता	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	अनुरागकुमार मोदी
क्या भारतीय नागरिक हैं ?	:	हाँ
पता	:	विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी-221 001
प्रकाशक का नाम	:	अनुरागकुमार मोदी
क्या भारतीय नागरिक हैं ?	:	हाँ
पता	:	विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी-221 001
सम्पादक का नाम	:	परागकुमार मोदी
क्या भारतीय नागरिक हैं ?	:	हाँ
पता	:	विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी-221 001

उन व्यक्तियों के नाम और पते जो पत्रिका के स्वामी और कुल प्रदत्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या भागीदार हैं—

विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी-221 001

मैं अनुरागकुमार मोदी, एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही हैं। ह/-

अनुरागकुमार मोदी, प्रकाशक

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 5 **मार्च 2004** **अंक : 3**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 40.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com
Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

: Offi. : (0542) 2421472, 2353741, 2353082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2353082